राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद

2016

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 1.

'गाधिसुत' किसे कहा गया है? वे मुनि की किस बात पर मन ही मन मुस्करा रहे थे?

Answer:

गाधिसुत मुनि विश्वामित्र को कहा गया है। परशुराम आत्मप्रशंसा में विश्वामित्र जी की ओर देखकर कह रहे थे कि वे उस उद्दंड बालक यानी लक्ष्मण को केवल उनके कारण छोड़ रहे हैं, वरना अपने फरसे से उसका वध करके गुरु के ऋण से उऋण हो जाते। यह कथन द्वारा राम-लक्ष्मण के शौर्य से परशुराम की अनभिज्ञता प्रकट होते देखकर ही विश्वामित्र मन-ही-मन मुस्करा रहे थे।

Question 2.

स्वयंवर स्थल पर शिव धनुष तोड़ने वाले को परशुराम ने किस प्रकार धमकाया?

Answer:

'स्वयंवर' स्थल पर शिव धनुष तोड़ने वाले को परशुराम ने धमकाते हुए कहा कि जिसने इस धनुष को तोड़ा है वह अब मेरा शत्रु है। सहस्रबाहु के समान अब उसका विनाश निश्चित है। राम के यह कहने पर कि आपके ही किसी दास ने इसे तोड़ा होगा, परशुराम अत्यंत क्रोधित हो कहने लगे कि दास तो वह होता है, जो सेवा करे। यह तो शत्रु का काम है। इसलिए अन्य सभी राजा स्वतः ही अलग हो जाएँ। क्योंकि धनुष तोड़ने वाले को उनसे अब कोई नहीं बचा सकता।

Question 3.

परशुराम की स्वभावगत विशेषताएँ क्या हैं? पाठ के आधार पर लिखिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

परशुराम के स्वभाव में अनेक विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं–

(*i*) वे अत्यंत क्रोधी थे। उन्हें हर छोटी-सी बात पर गुस्सा आ जाता था और वे सबके समक्ष अपने गुस्से पर नियंत्रण नहीं रख पाते थे।

(*ii*) वे दृढ़ निश्चयी थे। उन्होंने इस पृथ्वी को अपने दृढ़ प्रण के कारण अनेक बार क्षत्रिय विहिन कर दिया था।

(*iii*) वे अत्यंत वीर व शक्तिशाली थे। सभी राजाओं का विनाश करना कोई छोटा कार्य नहीं हो सकता।

(*iv*) वे बाल ब्रह्मचारी व बड़बोले थे। वे अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते थे और बढ़-चढ़ कर उसका बखान करते थे।

(*v*) उनमें विवेक का अभाव था। वे राम-लक्ष्मण को पहचान न सके। अच्छाई और बुराई में अंतर न कर पाए।

Question 4.

'साहस और शक्ति के साथ विनम्रता हो तो बेहतर है'– इस कथन पर अपने विचार 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' पाठ के आलोक में लिखिए।

Answer:

साहस और शक्ति दोनों ही मानव के अच्छे गुण हैं। विनम्रता भी अपने-आप में एक महत्त्वपूर्ण गुण है। यदि व्यक्ति में साहस व शक्ति के साथ विनम्रता भी हो, तो सोने पर सुहागा हो जाता है। राम में ये तीनों ही गुण थे, जबकि परशुराम में साहस व शक्ति तो कूट-कूट कर भरी थी पर विनम्रता नहीं। कोई भी साहसी व्यक्ति विनम्रता को अपनाकर प्रशंसनीय व सबका प्रिय बना सकता है। लेकिन विनम्रता के अभाव में साहस, दुस्साहस में परिवर्तित हो जाता है। विनम्रता, साहस व शक्ति पर अकुंश लगाकर उसे उद्दंड होने से रोकती है।

Question 5.

लक्ष्मण और परशुराम की चारित्रिक विशेषताओं में आप क्या अंतर पाते हैं? पाठ के आधार पर लिखिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

तुलसीदास जी द्वारा रचित रामचरित मानस से लिए गए 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' में परशुराम महाक्रोधी, उग्र एवं अति आत्मप्रशंसक यानी अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने वाले मुनि हैं। वे स्वयं को प्रचंड क्रोधी, महापराक्रमी, बाल ब्रह्मचारी एवं क्षत्रिय कुल का घातक बताते हैं। इस बड़बोलेपन के कारण उन्हें अपने बड़प्पन का भी ध्यान नहीं रहता, तभी वे लक्ष्मण से वाद-विवाद कर बैठते हैं, जबकि बड़प्पन की निशानी यही है कि छोटों के प्रति विनम्र रहा जाए।

इसके विपरीत लक्ष्मण के चरित्र में वाक्चातुर्य एवं तर्कशीलता जैसे गुण तो हैं, किंतु इनके साथ-साथ उनमें ज़बान से बड़ों की बराबरी करने का दोष भी है। वे ऐसे-ऐसे व्यंग्य-बाण छोड़ते हैं, जिनसे परशुराम जी क्रोध में उफन पड़ते हैं। इस प्रसंग के आधार पर यह कहना गलत न होगा कि अगर श्री राम जैसे विनम्र व संयमशील व्यक्ति बीच में न होते और विनम्रता के साथ परशुराम जी से क्षमा-याचना न करते, तो जनक-दरबार किसी अप्रिय घटना का साक्षी बन जाता।

Question 6.

'अयमय खाँड़ न ऊखमय' से क्या अभिप्राय है और यह कथन किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

Answer:

'अयमय खाँड़ न ऊखमय' यह कथन मन-ही-मन मुनि विश्वामित्र उस समय सोचते हैं, जब परशुराम बड़बोलेपन में कहते हैं कि वे पलभर में लक्ष्मण को मार डालेंगे। परशुराम को यह कहते देख वे सोचते हैं कि क्रोध में परशुराम जी ने कितनी सरलता से यह कह दिया कि वे अपने फरसे से लक्ष्मण को मार डालेंगे, किंतु उन्होंने यह विचार नहीं किया कि जिस बालक को वे गन्ने के रस की खाँड़ समझ रहे हैं, वह लोहे से बना खाँडा यानी तलवार के समान अस्त्र है, जिसे काट पाना इतना सरल नहीं है।

2015

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 7.

निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा। बार बार मोहि लागि बोलावा ॥
सुनत लखन के बचन कठोरा। परसु सुधारि धरेउ कर घोरा ॥
अब जनि देइ दोसु मोहि लोगू। कटुबादी बालकु बधजोगू ॥
बाल बिलोकि बहुत मैं बाँचा। अब येहु मरनिहार भा साँचा ॥

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(क) लक्ष्मण के किस कथन से उनकी निडरता का परिचय मिलता है?

(ख) परशुराम ने सभा से किस कार्य का दोष उन्हें न देने के लिए कहा?

(ग) परशुराम क्यों क्रोधित हो गए?

Answer:

(क) जब लक्ष्मण परशुराम से कहते हैं कि हे मुनि! आप तो हाँक लगा-लगाकर मृत्यु को मेरे लिए बुला रहे हैं। ऐसा कहने से उनकी निडरता का पता चलता है।

(ख) परशुराम ने पूरी सभा से कहा कि अब यह बालक मरने के लिए आतुर है क्योंकि इतना कटु वचन बोलने वाला बालक वध करने योग्य है। अतः इसकी मृत्यु का दोष मुझे मत देना।

(ग) जब लक्ष्मण उनसे कहते हैं कि हे मुनिवर! आप काल को जान-बूझकर मेरी तरफ़ लाने का प्रयास कर रहे हैं और व्यर्थ ही मुझे मारने की धमकी दे रहे हैं। यह सुनकर परशुराम अत्यंत क्रोधित हो गए।

Question 8.

निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

कहेउ लखन मुनि सीलु तुम्हारा। को नहि जान बिदित संसारा ॥
माता पितहि उरिन भये नीकें। गुररिनु रहा सोचु बड़ जी कें ॥
सो जनु हमरेहि माथें काढ़ा। दिन चलि गये ब्याज बड़ बाढ़ा ॥
अब आनिअ ब्यवहरिआ बोली। तुरत देउँ मैं थैली खोली ॥

(क) लक्ष्मण ने परशुराम पर क्या व्यंग्य किया?

(ख) यहाँ किस गुरु-ऋण की बात हो रही है उसे चुकाने के लिए लक्ष्मण ने परशुराम को क्या उपाय सुझाया?

(ग) 'माता पितहि उरिन भये नीकें' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

Answer:

(क) लक्ष्मण ने परशुराम पर व्यंग्य करते हुए कहा कि आप अपने माता-पिता के ऋण से तो मुक्त हो चुके हैं। अब आप पर गुरु ऋण ही शेष है, जो आप मेरे सिर थोपकर उतारना चाहते हैं।

(ख) यहाँ परशुराम के गुरु शिव का ऋण चुकाने की बात हो रही है। उसे चुकाने के लिए लक्ष्मण कहते हैं कि अब तक तो उसका ब्याज भी बहुत बढ़ गया होगा। अतः आप किसी को बुलाकर उसका हिसाब करवा लीजिए, मैं थैली खोलकर तुरंत वह ऋण चुकाने को तैयार हूँ।

(ग) इस पंक्ति में लक्ष्मण जी परशुराम जी से कह रहे हैं कि तुमने अपने माता-पिता का ऋण तो चुका ही दिया है केवल गुरु का ही शेष है। ऐसा वे व्यंग्य में कह रहे हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 9.

निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महाभट मानी ॥
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारु। चहत उड़ावन फूँकि पहारू ॥
इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं ॥

(क) लक्ष्मण ने परशुराम पर क्या व्यंग्य किया?

(ख) 'चहत उड़ावन फूँकि पहारू' से लक्ष्मण का क्या अभिप्राय है?

(ग) 'कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं' का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए।

Answer:

(क) लक्ष्मण ने अत्यंत ही मधुर वाणी में परशुराम पर व्यंग्य करते हुए कहा कि आप अपने आप को बहुत ही वीर योद्धा मानते हैं फिर भी मुझे बार-बार अपना फरसा दिखा रहे हैं और मुझ जैसे पहाड़ को केवल अपनी फूँक से ही उड़ा देना चाहते हैं।

(ख) 'चहत उड़ावन फूँकि पहारू' से लक्ष्मण का अभिप्राय है कि हम दोनों भाई भी कोमल न होकर पहाड़ के समान वीर क्षत्रिय हैं। हम आपकी फूँक से उड़ जाएँगे, आप ऐसा कैसे सोच सकते हैं।

(ग) 'कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं' का अभिप्राय यह है कि हम कद्दू के पुष्प व छुई-मुई के पौधे के समान कोमल नहीं हैं जो उँगली लगाते ही मुरझा जाएँगे। हम क्षत्रिय और वीर हैं, कमज़ोर नहीं हैं।

2014

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 10.

परशुराम के चरित्र की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

Answer:

प्रश्न 3 का उत्तर देखें।

Question 11.

लक्ष्मण ने वीर योद्धा की क्या विशेषताएँ बताई हैं?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' में लक्ष्मण ने वीर योद्धा की निम्नलिखित विशेषताओं पर प्रकाश डाला हैं–

- सच्चे शूरवीर युद्धभूमि में अपनी वीरता का प्रदर्शन करते हैं।
- वे आत्मप्रशंसा नहीं करते और न ही अपनी झूठी शान दिखाते हैं।
- वे धैर्यवान और क्षोभरहित होते हैं।
- उनका जीवन कर्म पर आधारित होता हैं। वे अपनी वीरता का परिचय देते हैं, शत्रु के समक्ष अपनी वीरता का बखान नहीं करते।
- सच्चे वीर कमज़ोर पर अपना पराक्रम नहीं दिखाते।

Question 12.

लक्ष्मण 'कुम्हड़बतिया' और 'तरजनी' के उदाहरण से अपनी किस बात को सिद्ध करना चाहते हैं और क्यों?

Answer:

लक्ष्मण 'कुम्हड़बतिया' और 'तर्जनी' के उदाहरण से ये स्पष्ट करना चाहते हैं कि वे कद्दू के फूल से बने कोमल फल के समान नहीं हैं जो तर्जनी उँगली के दिखाने से ही मुरझा जाएँगे। वे एक शूरवीर और क्षत्रिय वंशी हैं। अतः वे परशुराम के फूँक मारने से उड़ नहीं जाएँगे। वे पर्वत के समान कठोर, अडिग और शक्तिशाली हैं। अतः परशुराम व्यर्थ की डींगें मारकर उन्हें डराने-धमकाने का प्रयास न करें।

Question 13.

पठित काव्यांश के आधार पर राम के स्वभाव की दो विशेषताएँ लिखिए।

Answer:

राम के स्वभाव की अनेक विशेषताएँ हैं। वे तो मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। उनकी दो प्रमुख विशेषताएँ पठित काव्यांश के आधार पर निम्नलिखित हैं–

(*i*) राम बहुत विनम्र स्वभाव के हैं। वे ऋषि परशुराम के समक्ष स्वयं को उनका दास कहते हैं।

(*ii*) वे अत्यंत धैर्यशील और मृदुभाषी स्वभाव के हैं। वे शांत रहकर परशुराम के क्रोध का सामना करते हैं और उसे सहते हैं, वे लक्ष्मण को भी शांत रहने की आज्ञा देते हैं।

Question 14.

परशुराम के साथ संवाद के संदर्भ में राम और लक्ष्मण में से किसका व्यवहार आपकी दृष्टि में अधिक प्रशंसनीय है और क्यों?

Answer:

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

परशुराम के साथ संवाद के संदर्भ में राम और लक्ष्मण में से राम का व्यवहार प्रशंसनीय लगता है क्योंकि राम विनम्र और शांत रहकर ऋषि परशुराम की बातें सुनते हैं, जबकि लक्ष्मण उनकी बातें सुनकर भड़क जाते हैं।

लक्ष्मण की बातें परशुराम की क्रोध रूपी अग्नि में घी डालने का काम करती हैं, जबकि राम के शांत वचन और स्वयं को उनका दास बताना अग्नि में पानी डालकर शांत रहने का काम करते हैं। क्रोध किसी भी समस्या का समाधान नहीं होता है। क्रोधी व्यक्ति अपनी समझ व विवेक खो देता है और आवेश में आकर गलत कदम उठा सकता है। जबकि राम के समान धैर्यवान, मृदुभाषी, शांत व मर्यादा का पालन करना समस्या को समाधान की तरफ़ ले जाता है। अतः राम का व्यवहार ही प्रशंसनीय व स्वीकार्य है।

Question 15.

लक्ष्मण के अनुसार वीर योद्धा की क्या-क्या विशेषताएँ परशुराम में नहीं हैं।

Answer:

लक्ष्मण के अनुसार वीर योद्धा की निम्नलिखित विशेषताएँ परशुराम में नहीं हैं–

(*i*) वीरों के समान परशुराम वीरता का प्रदर्शन नहीं कर रहे हैं, केवल उसका बखान कर रहे हैं।

(*ii*) वीर युद्धभूमि में संग्राम कर अपना जौहर दिखाते हैं, न कि सिर्फ़ डींगें हाँकते हैं।

(*iii*) वीर अपनी प्रशंसा स्वयं नहीं करते हैं। उनकी कथनी और करनी में अंतर नहीं होता है।

(*iv*) वीरों के समान धैर्य व विनयशीलता के गुणों का अभाव भी लक्ष्मण परशुराम में बताते हैं।

Question 16.

परशुराम के क्रोध का मूल कारण क्या था? स्पष्ट कीजिए।

Answer:

परशुराम के क्रोध का मूल कारण शिव धनुष का टूट जाना था। वह धनुष स्वयं परशुराम ने राजा जनक को दिया था। जब राम ने धनुष तोड़ा, तो चारों तरफ़ उनकी प्रशंसा होने लगी थी, परंतु परशुराम इससे क्रोधित हो गए थे। जब उन्होंने धनुष तोड़ने वाले के विषय में पूछा, तो लक्ष्मण ने उनके क्रोध में घी डालने का काम किया। वे कहते हैं कि उनके लिए तो सभी घनुष एक समान हैं। ऐसा इस घनुष में क्या है? जो आप इतना क्रोधित हो रहे हैं। हमने तो बचपन में अनेक घनुष तोड़े हैं। मेरे भैया राम ने तो धनुष पर केवल प्रत्यंचा ही चढ़ाई थी और हाथ लगते ही यह टूट गया। इसमें विशेष क्या है? शिव धनुष के विषय में यह सब सुनकर परशुराम के क्रोध की सीमा नहीं रहती।

Question 17.

लक्ष्मण-परशुराम संवाद में तुलनात्मक दृष्टि से इन दोनों में से आपको किसका स्वभाव अच्छा लगता है? तर्कसम्मत उत्तर दीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

लक्ष्मण-परशुराम संवाद में यद्यपि दोनों ही कुछ स्थलों पर धैर्यवान प्रतीत नहीं होते, किंतु तुलनात्मक दृष्टि से इन दोनों में से हमें लक्ष्मण का स्वभाव ही अच्छा लगता है, क्योंकि व्यंग्य भी करते हैं, तो तभी करते हैं, जब परशुराम अपने बड़बोलेपन में अपनी वीरता का बखान कर उनका वध करने तक की धमकी देने लगते हैं या फिर फरसा दिखाकर डराने लगते हैं। लक्ष्मण इस प्रसंग में वीरता, उत्साह, तर्कशीलता, साहस आदि गुणों से युक्त दिखाई देते हैं। वे परशुराम द्वारा दी जाने वाली धमकियों अथवा वीरता के बखान से घबराते नहीं, बल्कि तर्क सहित उनकी बात का खंडन करते हैं। उनका यह ऐसा ओजपूर्ण व्यवहार हमें भी किसी के अनुचित व्यवहार को न सहने की प्रेरणा देता है।

Question 18.

लक्ष्मण ने किन तर्कों के आधार पर धनुष-भंजन के कार्य की निर्दोषता सिद्ध की?

Answer:

लक्ष्मण ने निम्नलिखित तर्कों के आधार पर धनुष-भंजन के कार्य की निर्दोषता सिद्ध की-

(*i*) भैया राम ने तो इसे केवल हाथ में पकड़ा ही था, इतने में ही वह टूट गया।

(*ii*) हमें नहीं पता था कि यह कोई विशेष धनुष है, हमने तो इसे साधारण ही समझा था।

(*iii*) हमने तो बचपन में भी ऐसे कई धनुष तोड़े हैं, हमें तो इसमें कोई विशेष बात नज़र नहीं आई।

(*iv*) भैया राम ने तो इसे नया धनुष समझा था, उन्हें नहीं पता था कि वह उनके छूते ही टूट जाएगा।

Question 19.

वीर योद्धा की विशेषताओं को पठित पाठ के आधार पर अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

Answer:

पाठ 'तुलसीदास' के 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' के अनुसार

- वीर, कहने में नहीं वीरता दिखाने में विश्वास रखते हैं।
- वे डींगें न हाँककर युद्धभूमि में वीरता भरे कर्मों से दुश्मन को जवाब देते हैं।
- वीर ओछी हरकतें नहीं करते और न ही किसी को अपशब्द कहते हैं। वीर साहसी होने के साथ-साथ धैर्यवान भी होते हैं।

Question 20.

परशुराम के स्वभाव एवं व्यक्तित्व की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताइए कि उनमें कौन-सी विशेषताएँ आपको अच्छी लगती हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

परशुराम के स्वभाव एवं व्यक्तित्व में अनेक विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं–

(*i*) वे अत्यंत क्रोधी थे। उन्हें छोटी-छोटी बातों पर भी क्रोध आ जाता था।

(*ii*) वे बड़बोले थे या स्वयं प्रशंसक भी, हम उन्हें कह सकते हैं। वे अपनी वीरता का बखान स्वयं करते रहते थे।

(*iii*) वे अत्यंत साहसी थे। अपने साहस के बल पर उन्होंने अनेक बार राजाओं को हराया।

(*iv*) वे दृढ़ संकल्पी थे। उन्होंने पृथ्वी को क्षत्रिय विहीन करने का जो संकल्प लिया, उसे पूरा किया।

(*v*) वे अत्यंत वीर और शिव भक्त थे।

हमें उनका दृढ़ संकल्पी और वीर व साहसी होना जैसी विशेषताएँ अत्यंत अच्छी लगती हैं। इन गुणों को कोई भी अपने जीवन में उतार कर सफल बन सकता है।

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 21.

निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महाभट मानी ॥
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारु। चहत उड़ावन फूँकि पहारू ॥
इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं ॥
देखि कुठारु सरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना।

(क) 'मुनीसु' कौन है? लक्ष्मण उनसे बहस क्यों कर रहे हैं?

(ख) लक्ष्मण के हँसने का क्या कारण है?

(ग) लक्ष्मण की 'मृदुवाणी' की क्या विशेषता है?

(घ) आशय स्पष्ट कीजिए– चहत उड़ावन फूँकि पहारु।

(ङ) 'कुम्हड़बतिया' का उदाहरण क्यों दिया गया है?

Answer:

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(क) यहाँ मुनीसु 'मुनि परशुराम' को कहा गया है। लक्ष्मण उनसे इसलिए बहस कर रहे हैं क्योंकि परशुराम स्वयं को इस धरती को नृप विहीन करने वाले योद्धा बताते हुए व फरसे का भय दिखा रहे हैं और राम, लक्ष्मण को अत्यंत सुकोमल मान रहे हैं। लक्ष्मण को यह बर्दाश्त नहीं होता है और वह बहस करके स्वयं की वीरता प्रमाणित करना चाहते हैं।

(ख) लक्ष्मण को इसलिए हँसी आ रही है क्योंकि परशुराम बार-बार उन्हें फरसा दिखा रहे हैं, जिससे उन्हें लगता है कि मानो वे फूँक मारकर पहाड़ उड़ाने का प्रयास कर रहे हों।

(ग) लक्ष्मण की मृदुवाणी व्यंग्य से परिपूर्ण है जो परशुराम को शांत करने की अपेक्षा उत्तेजित कर रही है।

(घ) इस पंक्ति का आशय है कि परशुराम, राम-लक्ष्मण को कमज़ोर समझने की भूल कर रहे हैं, जबकि वे महा-योद्धा हैं। जिन्होंने अनेक राक्षसों को चुटकियों में मसल दिया। वे पहाड़ के समान मज़बूत हैं। जबकि परशुराम उन्हें फूँक से उड़ाना चाहते हैं अर्थात अपनी बातों व फरसे से भयभीत करना चाहते हैं।

(ङ) 'कुम्हड़बतिया' कद्दू का छोटा फल होता है जो अत्यंत कोमल होता है। वह उँगली लगने से मुरझा जाता है। लक्ष्मण इसका उदाहरण देकर कहना चाहते हैं कि आपने हमें इस फल की तरह कमज़ोर समझ लिया है। हम कुम्हड़बतिया नहीं हैं जो तुम्हारी धमकियों से डर जाएँगे।

Question 22.

निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

लखन कहेउ मुनि सुजसु तुम्हारा। तुम्हहि अछत को बरनै पारा॥
अपने मुहु तुम्ह आपनि करनी। बार अनेक भाँति बहु बरनी॥
नहि संतोषु त पुनि कछु कहहू। जनि रिस रोकि दुसह दुख सहहू॥
बीरब्रती तुम्ह धीर अछोभा। गारी देत न पावहु सोभा॥

(क) लक्ष्मण परशुराम को ही उनका अपना यश बखानने में समर्थ क्यों मानते हैं?

(ख) आपके विचार से लक्ष्मण का कौन-सा कथन सर्वाधिक व्यंग्यपूर्ण है?

(ग) अपने मुँह अपना गुणगान करने वाला समाज में क्या कहलाता है?

(घ) आशय स्पष्ट कीजिए– 'नहि संतोषु त पुनि कछु कहहू'

(ङ) लक्ष्मण ने परशुराम के किन गुणों की ओर संकेत किया है?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(क) लक्ष्मण, परशुराम को ही उनका अपना यश बखानने में समर्थ मानते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि परशुराम से अधिक स्वयं की वीरता की प्रशंसा अन्य कौन कर सकता है। ऐसा वे व्यंग्य में कहते हैं। यदि अभी आत्मप्रशंसा करनी और रह गई हो, तो वह भी कर डालिए। मन में रोष रखने से कुछ लाभ नहीं होगा।

(ख) हमारे विचार से लक्ष्मण का यह कथन सर्वाधिक व्यंग्यपूर्ण है कि यदि आपको आत्मप्रशंसा से अभी संतोष न हुआ हो, तो फिर से कुछ कह डालिए। मन में रोष या दुख न रखिए।

(ग) अपने मुख अपना गुणगान करने वाला समाज में डींगें हाँकने वाला कायर कहलाता है।

(घ) इस पंक्ति में लक्ष्मण परशुराम जी से कह रहे हैं कि यदि आपके द्वारा अपनी वीरता के बखान में कुछ कमी रह गई हो, तो मन में मत रखिए। आप और ज़्यादा अपनी वीरता की प्रशंसा कर सकते हैं। बार-बार अपनी ताकत का गुणगान कर सकते हैं। अपने आवेग को रोककर कृपया दुख न सहिए।

(ङ) लक्ष्मण ने परशुराम को आत्मप्रशंसक, अधीर, क्रोधी और डींगें हाँकने वाला कहा है। वे कहते हैं कि हे! परशुराम आप वीर हैं, गाली देना आपको शोभा नहीं देता है।

Question 23.

निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा ॥
आयेसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही ॥

सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरिकरनी करि करिअ लराई ॥
सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा ॥

(क) 'नाथ' संबोधन किसके लिए प्रयुक्त हुआ है और क्यों?

(ख) 'राम' ने अपने को 'दास' क्यों कहा है?

(ग) परशुराम राम की करनी को क्या मानते हैं और क्यों?

(घ) परशुराम किसे शत्रु मान रहे हैं और क्यों?

(ङ) 'सहसबाहु' कौन था?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(क) 'नाथ' संबोधन 'परशुराम जी' के लिए प्रयुक्त हुआ है क्योंकि राम अपने विनम्र शब्दों से उनके क्रोध को शांत करना चाहते हैं।

(ख) राम ने स्वयं को दास इसलिए कहा है क्योंकि स्वयं को दास बताकर वह परशुराम की वीरता और सम्मान को गुरु समान मानते हैं और अप्रत्यक्ष रूप से धनुष तोड़ने की बात स्वीकार कर लेते हैं।

(ग) परशुराम, राम की 'करनी' को शत्रुता का कार्य मानते हैं। उनके अनुसार सेवक तो सेवा करता है, परंतु शिव धनुष तोड़कर राम ने शत्रु समान कार्य किया है क्योंकि शिव धनुष उन्हें अत्यंत प्रिय था।

(घ) परशुराम 'राम' को शत्रु मान रहे हैं क्योंकि राम ने उनके प्रिय शिव धनुष को खंडित किया था।

(ङ) सहसबाहु एक राजा था जिसने परशुराम के पिता की कामधेनु नामक गाय जो एक विशेष कामना पूर्ति करने वाली गाय थी, का बलपूर्वक अपहरण कर लिया था, इसी से कुपित होकर परशुराम ने सहसबाहु का वध कर दिया था।

2013

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 24.

'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' के आधार पर राम के स्वभाव की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

Answer:

'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' के आधार पर राम के स्वभाव की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

(*i*) राम अत्यंत विनम्रशील स्वभाव के हैं। वे परशुराम के क्रोध को शांत करने के लिए स्वयं को उनका 'दास' बताते हैं।

(*ii*) राम मर्यादापुरुषोत्तम कहलाए क्योंकि वे सदा बड़ों की आज्ञा मानते थे इसलिए वे परशुराम से भी यही पूछते हैं कि अब उनके लिए क्या आज्ञा है। वे धैर्यवान भी हैं और धैर्य धारण कर परशुराम की हर बात सुनते हैं और शीतल व्यवहार से उनका क्रोध शांत करते हैं।

Question 25.

लक्ष्मण ने वीर योद्धा की क्या-क्या विशेषताएँ बताई हैं?

Answer:

प्रश्न 11 का उत्तर देखें।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 26.

'साहस और शक्ति के साथ विनम्रता भी हो तो बेहतर है।' राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद के आधार पर टिप्पणी कीजिए।

Answer:

'साहस और शक्ति के साथ विनम्रता भी हो तो बेहतर होता है क्योंकि बिना विनम्रता के साहस दुस्साहस में परिवर्तित हो सकता है और शक्ति उद्दंडता का रूप ले सकती है। साहस और शक्ति दोनों सद्गुण होते हैं, परंतु विनम्रता के साथ ये मानव को पूजनीय व अनुकरणीय बना देते हैं। राम के अंदर साहस और शक्ति के साथ विनम्रता भी थी इसलिए वे प्रशंसनीय व पूजनीय बने, जबकि परशुराम साहस और शक्ति होने के बाद भी क्रोधी कहलाए क्योंकि उनमें विनम्रता का अभाव था।

Question 27.

लक्ष्मण ने परशुराम को धनुष के टूट जाने के लिए क्या-क्या तर्क दिए?

Answer:

लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के निम्नलिखित कारण परशुराम को दिए–

(*i*) भैया राम ने तो इसे नया धनुष समझकर केवल हाथ ही लगाया था और यह पकड़ते ही टूट गया।

(*ii*) हमने तो बचपन में ऐसे कई धनुष तोड़े हैं। हमें तो इसमें कोई विशेष बात नज़र नहीं आई।

(*iii*) हमें नहीं पता थां कि ये विशेष शिव-धनुष है, हमने तो इसे साधारण ही समझा था।

(*iv*) भैया राम तो इससे बाण चलाना चाहते थे, पर यह तो छूते ही टूट गया।

Question 28.

राम, लक्ष्मण एवं परशुराम में से किसका व्यवहार आपको अधिक अच्छा लगता है? क्यों? तर्कसहित उत्तर दीजिए।

Answer:

राम, लक्ष्मण एवं परशुराम में से हमें राम का व्यवहार सबसे अच्छा लगता है क्योंकि उनमें निम्नलिखित अनुकरणीय गुण हैं–

(*i*) वे साहसी, शक्तिवान होने के साथ-साथ विनम्र हैं।

(*ii*) वे आज्ञाकारी और मृदुभाषी हैं। क्रोध उन्हें छूकर तक नहीं गया।

(*iii*) वे धैर्यवान और संयमी है। परशुराम की सभी बातें धैर्य के साथ सुनते हैं।

(*iv*) वे मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। नियम के बाहर कोई कार्य नहीं करते हैं।

Question 29.

'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' के आधार पर लिखिए कि विनम्रता को साहस और शक्ति कैसे कहा जा सकता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:
'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' कविता के अनुसार विनम्रता के साथ ही साहस और शक्ति का महत्त्व होता है। बिना विनम्रता के साहस दुस्साहस बन जाता है और शक्ति निरंकुशता में परिवर्तित हो जाती है। कविता में राम को साहस और शक्ति के साथ विनम्र दिखाया गया है इसलिए वे पूजनीय व श्रेष्ठ हैं, वे अपनी शक्ति का प्रदर्शन बड़प्पन के लिए नहीं करते। जबकि दूसरी तरफ़ परशुराम में भी साहस और शक्ति है पर वे विनम्र न होकर क्रोधी हैं, जिस कारण वे अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हुए सभा में भय उत्पन्न करते हैं और लक्ष्मण द्वारा व्यंग्य का पात्र बनते हैं।

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 30.

निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

बालकु बोलि बधौं नहि तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोही ॥
बाल ब्रह्मचारी अति कोही। बिस्वबिदित क्षत्रियकुल द्रोही ॥
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही। बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही ॥
सहसबाहुभुज छेदनिहारा। परसु बिलोकु महीपकुमारा ॥

(क) काव्यांश में किसका किसके प्रति संबोधन है?

(ख) परशुराम की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(ग) 'परशु' की क्या विशेषता थी? लिखिए।

(घ) अलंकार बताइए– भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही।

(ङ) आशय स्पष्ट कीजिए 'केवल मुनि जड़ जानहि मोही'।

Answer:

(क) काव्यांश में परशुराम लक्ष्मण को संबोधित कर रहे हैं।

(ख) (*i*) परशुराम अत्यंत क्रोधी थे।

(*ii*) वे अत्यंत वीर और साहसी थे। उन्होंने अनेक बार भूमि को क्षत्रिय विहीन कर दिया था।

(ग) 'परशु' अर्थात परशुराम के 'फरसे' की विशेषता थी कि उसने सहसबाहु की भुजाओं को काट दिया था और यह फरसा गर्भ में ही शिशुओं को नष्ट करने की क्षमता रखता था।

(घ) भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही-में 'भ' आवृत्ति से 'अनुप्रास' अलंकार है।

(ङ) इस पंक्ति का आशय यह है कि परशुराम अत्यंत क्रोध में लक्ष्मण से कहते हैं कि तुम मुझे केवल मुनि समझने की भूल मत करना। मैं बाल ब्रह्मचारी और अत्यंत क्रोधी हूँ। सारा संसार यह जानता है कि मैंने इस धरती से राजाओं का विनाश कर इसे ब्राह्मणों को दान में दे दिया है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 31.

निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

नाथ संभु धनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा ॥
आयेसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही॥
सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरिकरनी करि करिअ लराई ॥
सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा ॥

(क) 'नाथ' शब्द द्वारा कौन किसे संबोधित कर रहा है?

(ख) 'एक दास तुम्हारा' कथन वक्ता के स्वभाव की किस विशेषता का द्योतक है?

(ग) कविता में सेवक की क्या परिभाषा दी गई है?

(घ) परशुराम किस कार्य को 'अरिकरनी' कह रहे हैं?

(ङ) मुनि के लिए 'कोही' विशेषण के प्रयोग की उपयुक्तता बताइए।

Answer:

(क) 'नाथ' शब्द द्वारा 'राम' परशुराम को संबोधित कर रहे हैं।

(ख) 'एक दास तुम्हारा' कथन वक्ता श्री राम की विनम्रता, आज्ञाकारिता और सेवाभाव को प्रकट करता है।

(ग) कविता में सेवक उसे बताया है जो सेवा भाव के साथ अपने स्वामी की सेवा करता है।

(घ) परशुराम 'शत्रुता का कार्य' करने को 'अरिकरनी' कह रहे हैं।

(ङ) मुनि के लिए 'कोही' विशेषण इसलिए उपयुक्त है क्योंकि परशुराम वास्तव में ही 'कोही' मुनि अर्थात 'क्रोधी' स्वभाव के थे।

Question 32.

निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

पुनि-पुनि मोहि देखाव कुठारू। चहत उड़ावत फूँकि पहारू।
इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं।
देखि कुठारु सरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना।
भृगुसुत समुझि जनेउ बिलोकी। जो कछु कहहु सहौं रिस रोकी।
सुर महिसुर हरिजन अरु गाई। हमरे कुल इन्ह पर न सुराई।

(क) 'चहत उड़ावन फूँकि पहारू' पंक्ति लक्ष्मण के किस भाव की व्यंजक है?

(ख) 'कुम्हड़बतिआ' का अर्थ स्पष्ट करते हुए बताइए कि वह चौपाई में किसका प्रतीक है।

(ग) लक्ष्मण ने परशुराम के किन हथियारों को देखा और क्या कहा?

(घ) 'भृगुसुत समुझि जनेउ बिलोकी' का आशय समझाइए।

(ङ) चौपाई में लक्ष्मण के कुल की क्या विशेषता बताई गई है?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(क) 'चहत उड़ावन फूँकि पहारू' पंक्ति लक्ष्मण के इस भाव की व्यंजक है कि वे कोई कमज़ोर बालक नहीं हैं। वे पहाड़ के समान मज़बूत और वीरता में अडिग हैं, अतः परशुराम के द्वारा क्रोध में फुँकारने से वे उड़ नहीं सकते हैं।

(ख) 'कुम्हड़बतिया' कद्दू का छोटा सा फल होता है जो अत्यंत कोमल होता है। कविता में उसका अर्थ है कि वे कुम्हड़बतिया की तरह कमज़ोर नहीं हैं जो उनके गुस्से से डर जाएँगे। इस चौपाई में राम-लक्ष्मण को कमज़ोर व अशक्त न बताकर, उन्हें समर्थ बताने के लिए प्रयोग किया है। लक्ष्मण ने यह पंक्ति व्यंग्य में कही है।

(ग) लक्ष्मण ने परशुराम के धनुष-बाण और फरसे को देखा और कहा कि आपने इन्हें व्यर्थ ही धारण किया है। आप तो इतने कठोर वचन बोलते हैं, जिन्हें सुनकर शत्रु स्वयं ही आपके पैरों में आन पड़ेगा।

(घ) 'भृगुसुत समुझि जनेउ बिलोकी' का आशय यह है कि लक्ष्मण परशुराम से कहते हैं कि उन्होंने तो उनको भृगुसुत अर्थात ब्राह्मण, समझकर और उनका जनेऊ देखकर अपने क्रोध को वश में कर लिया क्योंकि उनके कुल में देवता, ब्राह्मण, भक्त और गौ पर वीरता का प्रदर्शन नहीं किया जाता है।

(ङ) चौपाई में लक्ष्मण के कुल की विशेषता बताई गई है उनके कुल में देवता, ब्राह्मण, भक्त और गौ पर शूरवीरता नहीं दिखाई जाती। ये पूजनीय माने जाते हैं।

2012

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 33.

'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' में लक्ष्मण ने वीर योद्धा की क्या-क्या विशेषताएँ बताई हैं?

Answer:

प्रश्न 11 का उत्तर देखें।

Question 34.

लक्ष्मण के स्थान पर यदि आप होते तो परशुराम से कैसा व्यवहार करते और क्यों?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

लक्ष्मण क्रोधी स्वभाव के थे और परशुराम भी अत्यंत क्रोधी व वाचाल थे। उन्हें अपनी मर्यादा का भी ज्ञान नहीं था। परशुराम के क्रोध में लक्ष्मण के वचन अग्नि का कार्य कर रहे थे। ऐसे में क्रोध को क्रोध से जीता नहीं जा सकता। लक्ष्मण के स्थान पर यदि मैं होता तो निश्चित रूप से मेरा व्यवहार विनम्रता से परिपूर्ण होता क्योंकि साहस और शक्ति को विनम्रता और मधुरता से जीता जा सकता है। विनम्रता साहस और शक्ति को उद्दंड बनने से रोकती है। मैं विनम्रता पूर्ण मधुर व्यवहार से परशुराम जैसे क्रोधी व्यक्ति को भी संयमित कर देता।

Question 35.

'राम-लक्ष्मण-परशुराम-संवाद' पाठ में राम और लक्ष्मण के स्वभाव में आपको क्या अंतर दिखाई दिया? एक-एक उदाहरण दीजिए।

Answer:

'राम-लक्ष्मण परशुराम संवाद' में राम और लक्ष्मण के स्वभाव में निम्न भिन्नताएँ नज़र आती हैं। राम स्वभाव से विनयशील एवं कोमल हैं। अपने गुरुजनों का आदर करने वाले हैं। बड़ों की आज्ञा का पालन करना उनके स्वभाव की विशिष्टिता है। वह बहुत ही विनम्र एवं मृदुभाषी हैं। वीर, साहसी एवं निडर होते हुए भी वह बहुत ही धैर्यवान हैं। जैसे– राम विनम्रता पूर्वक कहते हैं कि हे नाथ, इस धनुष को तोड़ने वाला आप ही का दास है। लक्ष्मण राम से छोटे हैं, परंतु बहुत ही वाचाल हैं। वाक्पटुता उनमें कूट-कूट कर भरी हुई है। तार्किकता उनके व्यक्तित्व का विशिष्ट गुण है। वह हर बात में परशुराम से तर्क करते हैं। वे बहुत ही बुद्धिमान एवं व्यंग्य में निपुण हैं। हर बात का उत्तर देने के लिए उनकी बुद्धि तत्पर है। वह वीर, निडर एवं साहसी हैं परंतु क्रोध भी उनके व्यक्तित्व का एक अंश है। जैसे– लक्ष्मण द्वारा कहा गया है कि वे कुम्हड़बतिया की तरह कमज़ोर नहीं है।

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 36.

निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

लखन कहेउ मुनि सुजसु तुम्हारा। तुम्हहि अछत को बरनै पारा ॥
अपने मुहु तुम्ह आपनि करनी। बार अनेक भाँति बहु बरनी ॥
नहि संतोषु त पुनि कछु कहहू। जनि रिस रोकि दुसह दुख सहहू ॥
बीरब्रती तुम्ह धीर अछोभा। गारी देत न पावहु सोभा ॥

(क) लक्ष्मण ने परशुराम पर क्या व्यंग्य किया है?

(ख) लक्ष्मण के व्यंग्यमय शब्दों से परशुराम के व्यक्तित्व की कौन-सी विशेषताएँ अभिव्यक्त हुई हैं?

(ग) परशुराम द्वारा गाली देना उनको शोभा क्यों नहीं देता है?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(क) लक्ष्मण ने परशुराम पर व्यंग्य करते हुए कहा कि हे मुनि! तुम्हारे यश का वर्णन तुम्हारे अतिरिक्त कौन कर सकता है क्योंकि अनेक बार तुमने अपने मुख से अपनी प्रशंसा की है और अगर फिर भी तुम्हें संतुष्टि नहीं मिली है, तो पुनः आत्म प्रशंसा में कुछ कह सकते हो।

(ख) लक्ष्मण के व्यंग्यमय शब्दों से परशुराम के व्यक्तित्व की निम्न विशेषताएँ अभिव्यक्त हुई हैं–

(*i*) परशुराम आत्मप्रशंसक हैं।

(*ii*) वे वीर हैं, किंतु उनके स्वभाव में बड़बोलापन है।

(*iii*) वे क्रोधी स्वभाव के हैं और क्रोध में भरकर अपशब्द तक कह देते हैं।

(ग) परशुराम द्वारा गाली देना उनको शोभा इसलिए नहीं देता क्योंकि लक्ष्मण के अनुसार वे वीरव्रती, धैर्यवान और क्षोभरहित मुनि माने जाते हैं। ऐसे में उनके द्वारा यह कार्य शोभनीय नहीं है।

Question 37.

निम्नलिखित काव्यांश पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा ॥
आयेसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही ॥
सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरि करनी करि करिअ लराई ॥
सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा ॥

(क) पद्यांश के आधार पर राम के स्वभाव की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(ख) परशुराम ने 'सेवक' और 'शत्रु' किसको कहा है?

(ग) 'सहसबाहु' कौन था?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(क) पद्यांश के आधार पर राम के स्वभाव की दो विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

(*i*) राम स्वभाव से विनम्र एवं मृदुभाषी हैं। परशुराम के समक्ष स्वयं को उनका एक दास बताकर अपनी विनम्रता का परिचय देते हैं।

(*ii*) राम बहुत ही धैर्यवान हैं। वह परशुराम के क्रोधित होने पर भी आवेश में नहीं आते, अपितु उनसे विनयपूर्वक बात करते हुए उनके क्रोध को शांत करने का प्रयास करते हैं।

(ख) परशुराम ने 'सेवक' उसे कहा है जो अपने स्वामी की सेवा करे। उसके अनुरूप आचरण करे तथा सदैव अपने स्वामी को प्रसन्न रखे। परशुराम के लिए शत्रु वह है, जिसने शिव के धनुष को तोड़ा है। उनकी दृष्टि में वह सहस्रबाहु के समान उनका शत्रु है।

(ग) 'सहस्रबाहु' अत्यंत शक्तिशाली राजा था। उनके गुरु दत्तात्रेय ने वरदान के रूप में उन्हें सहस्र भुजाएँ प्रदान की थीं। वह एक वीर शक्तिशाली योद्धा था। परशुराम का वह शत्रु था क्योंकि उसने परशुराम के पिता ऋषि जमदग्नि के आश्रम से कामधेनु गाय को बलपूर्वक उठा लिया था। परशुराम ने क्रोध में आकर फरसे से उसका वध कर दिया था।

Question 38.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़ कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

बिहँसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महाभट मानी ॥
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू। चहत उड़ावन फूँकि पहारू ॥
इहाँ कुम्हड़बतियाँ कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मर जाहीं ॥
देखी कुठारु सरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना ॥

(क) लक्ष्मण के हँसने का कारण स्पष्ट कीजिए।

(ख) 'चहत उड़ावन फूँकि पहारू' का आशय समझाइए।

(ग) लक्ष्मण ने अपने वचनों द्वारा परशुराम के व्यक्तित्व की किन विशेषताओं को उजागर किया है?

Answer:

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(क) लक्ष्मण के हँसने का कारण यह था कि परशुराम बार-बार आत्मप्रशंसा कर रहे थे। अपने आप को अत्यधिक बलशाली योद्धा बता रहे थे। उनके आत्मप्रशंसा पूर्ण वचनों को सुनकर लक्ष्मण को हँसी आ रही थी। वे बार-बार उन्हें फरसा दिखाकर भयभीत करने का प्रयास कर रहे थे। वास्तव में, लक्ष्मण की हँसी में परशुराम के प्रति व्यंग्य छुपा हुआ था।

(ख) 'चहत उड़ावन फूँकि पहारू'– पंक्ति में लक्ष्मण ने परशुराम की वीरता पर व्यंग्य किया है क्योंकि वह बार-बार फरसा दिखाकर लक्ष्मण को भयभीत कर रहे थे। स्वयं को इस प्रकार अत्यंत शक्तिशाली दिखा रहे थे, मानो फूँक से पहाड़ को उड़ा देंगे। परंतु लक्ष्मण इसके प्रत्युत्तर में यह कहना चाहते हैं कि इस प्रकार ज़ोर-ज़ोर से बोलकर अपनी वीरता का व्याख्यान करना व्यर्थ है। इस सभा में उनके अतिरिक्त और भी शक्तिशाली वीर योद्धा विद्यमान हैं। इस पंक्ति में लक्ष्मण द्वारा परशुराम के प्रति किया गया व्यंग्य पुष्ट हो रहा है।

(ग) लक्ष्मण ने अपने वचनों से परशुराम के व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताओं को उजागर किया है–

(*i*) परशुराम मुनि श्रेष्ठ हैं।
(*ii*) महाशक्तिशाली हैं।
(*iii*) वीर योद्धा हैं।
(*iv*) क्रोधी स्वभाव के हैं।
(*v*) आत्मप्रशंसक हैं।
(*vi*) वे अति आत्मविश्वासी हैं, इसी कारण अपने विपक्षियों को छुई-मुई का पौधा समझते हैं।

2011

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 39.

'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' काव्यांश के आधार पर राम और लक्ष्मण के स्वभाव की विशेषताएँ लिखिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' के आधार पर राम और लक्ष्मण के स्वभाव की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–
राम अत्यंत विनम्रशील स्वभाव के हैं। वे परशुराम के क्रोध को शांत करने के लिए स्वयं को उनका 'दास' बताते हैं। राम मर्यादापुरुषोत्तम कहलाए क्योंकि वे सदा बड़ों की आज्ञा मानते थे इसलिए वे परशुराम से भी यही पूछते हैं कि अब उनके लिए क्या आज्ञा है। वे धैर्यवान भी हैं और धैर्य धारण कर परशुराम की हर बात सुनते हैं और शीतल व्यवहार से उनका क्रोध शांत करते हैं।
लक्ष्मण बहुत ही निर्भीक, वीर पुरुष हैं। वे बहुत ही मुँहफट परंतु स्पष्टवादी हैं। परशुराम के क्रोध से वह ज़रा-सा भी भयभीत नहीं होते है, अपितु अपनी तार्किक बुद्धि से वह परशुराम का विरोध करते हैं। लक्ष्मण बहुत ही चतुर स्वभाव के हैं। बहुत ही सरल, सहज वाणी द्वारा वह परशुराम का उपहास करने से भी नहीं चूकते।

Question 40.

'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' पाठ में लक्ष्मण ने वीर योद्धा की क्या-क्या विशेषताएँ बताई हैं?

Answer:

प्रश्न 11 का उत्तर देखें।

Question 41.

'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' के आधार पर शूरवीर की विशेषताएँ बताइए।

Answer:

प्रश्न 11 का उत्तर देखें।

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 42.

निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

सूर समर करनी करहिं कहि न जनावहि आपु।
विद्यमान रन पाइ रिपु कायर कथहिं प्रतापु ॥

(क) उपर्युक्त दोहा किसके द्वारा, किस संदर्भ में कहा गया है?

(ख) शूरवीर की क्या-क्या विशेषताएँ बताई गई हैं?

(ग) कायर का क्या लक्षण है?

Answer:

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(क) उपर्युक्त दोहा लक्ष्मण द्वारा कहा गया है। यहाँ संदर्भ यही है कि लक्ष्मण परशुराम द्वारा पूर्व में कहे कथन से क्षुब्ध थे क्योंकि परशुराम ने विश्वामित्र जी से कहा था कि अपने वंश का नाश करने वाले इस बालक को यदि आप बचाना चाहते हैं तो मेरे प्रताप, बल और रोष को बताकर इसे रोक लें।

(ख) शूरवीर व्यक्ति अपनी वीरता का प्रदर्शन करता है, अपनी आत्मप्रशंसा नहीं करता। उसका हर कार्य कर्म पर आधारित होता है। वह शत्रु के समक्ष अपनी वीरता का बखान नहीं करता, अपनी शक्ति का प्रदर्शन करता है।

(ग) कायर व्यक्ति युद्धभूमि में शत्रु को अपने सम्मुख देखकर वृथा ही प्रलाप करता है। वह अपनी वीरता की प्रशंसा करके शत्रु को डराना चाहता है।

Question 43.

निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

लखन कहेउ मुनि सुजसु तुम्हारा। तुम्हहि अछत को बरनै पारा ॥
अपने मुहु तुम्ह आपनि करनी। बार अनेक भाँति बहु बरनी ॥
नहि संतोषु त पुनि कछु कहहू। जनि रिस रोकि दुसह दुख सहहू ॥
बीरब्रती तुम्ह धीर अछोभा। गारी देत न पावहु सोभा ॥

(क) कविता में लक्ष्मण परशुराम के किस यश की ओर संकेत कर रहे हैं?

(ख) वे उनसे क्या अनुरोध कर रहे हैं?

(ग) 'बीरब्रती तुम्ह धीर अछोभा। गारी देत न पावहु सोभा ॥' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

Answer:

(क) कविता में लक्ष्मण परशुराम के उस यश की ओर संकेत कर रहे हैं, जिस यश का वर्णन परशुराम ने स्वयं अपने मुख से किया है। उन्होंने स्वयं को क्षत्रिय कुल का शत्रु कहा है। इस पृथ्वी को राजाओं से रहित करने वाला तथा सहस्रबाहु की भुजाओं को काटने वाला बताया है।

(ख) लक्ष्मण परशुराम से अनुरोध कर रहे हैं कि आपने अपने मुख से आत्म प्रशंसा बहुत कर ली अगर फिर भी संतुष्टि नहीं हुई है तो और कुछ बखान कर डालिए, अपने क्रोध को मत रोकिए।

(ग) 'वीरव्रती तुम्ह धीर अछोमा, गारी देत न पावहु शोभा' पंक्ति में यद्यपि लक्ष्मण परशुराम पर व्यंग्य कर रहे हैं, परंतु इन व्यंग्यपूर्ण शब्दों में भी परशुराम के व्यक्तित्व की निम्न विशेषताएँ अभिव्यक्ति हुई हैं– (*i*) परशुराम वीरता के व्रत का पालन करने वाले हैं (*ii*) वह धैर्यवान हैं (*iii*) क्षोभ से रहित हैं। लक्ष्मण परशुराम से यह कहना चाहते हैं कि इन गुणों के होते हुए उन्हें गाली देना शोभा नहीं देता। वे वास्तव में, परशुराम को वीर पुरुष के अनुरूप व्यवहार करने के लिए कह रहे हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 44.

निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

लखन उतर आहुति सरिस भृगुबरकोपु कृसानु।
बढ़त देखि जलसम बचन बोले रघुकुलभानु ॥

(क) काव्यांश किस छंद में लिखा गया है? **(ख) काव्यांश की भाषा का नाम लिखिए।**

(ग) उपमा अलंकार का एक उदाहरण चुनकर लिखिए। **(घ) राम को 'रघुकुल-भानु' क्यों कहा है?**

(ङ) लखन, उतर का तत्सम रूप लिखिए।

Answer:

(क) काव्यांश दोहा छंद में लिखा गया है। (ख) काव्यांश की भाषा 'अवधी' है।

(ग) 'लखन उतर आहुति सरिस भृगुबरकोपु कृसानु'– पंक्ति में उपमा अलंकार है।

(घ) राम को 'रघुकुल-भानु' इसलिए कहा है क्योंकि राम रघुकुलवंश के सूर्य हैं। वे रघुकुलवंश के न केवल उत्तराधिकारी हैं, अपितु रघुकुल वंश की मर्यादा की रक्षा करने वाले एवं उसके नाम, यश, तेज को बढ़ाने वाले हैं।

(ङ) लखन – लक्ष्मण
उतर – उत्तर

Question 45.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महाभट मानी ॥
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू। चहत उड़ावन फूँकि पहारू ॥
इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं ॥
देखि कुठारू सरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना ॥

(क) लक्ष्मण ने मृदु वाणी में मुस्करा कर परशुराम से क्या कहा?

(ख) 'चहत उड़ावन फूँकि पहारू'– पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ग) इस काव्यांश में लक्ष्मण के स्वभाव की किन विशेषताओं का परिचय मिलता है?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(क) लक्ष्मण ने मृदु वाणी में परशुराम से कहा कि आप स्वयं को महान योद्धा समझते हैं और बार-बार मुझे कुठार दिखा कर यह सिद्ध करना चाहते हैं कि आप फूँक से पहाड़ को उड़ा सकते हैं, परंतु यहाँ हम काशीफल के छोटे फल के समान या छुई-मुई के पौधे जैसे अति निर्बल नहीं हैं जो छोटी उँगली दिखाने मात्र से मुरझा जाएँगे। यहाँ लक्ष्मण ऐसा कहकर परशुराम की गर्व पूर्ण उक्ति पर व्यंग्य कर रहे हैं।

(ख) 'चहत उड़ावन फूँकि पहारू'– पंक्ति के द्वारा लक्ष्मण परशुराम की गर्वोक्ति का उपहास उड़ा रहे हैं। वह परशुराम को यह कहना चाहते हैं कि आप गरज-गरज कर अपनी वीरता का बखान ही नहीं कर रहे हैं, अपितु आप यह भी सिद्ध करना चाहते हैं कि आप फूँक से पहाड़ को उड़ा देना चाहते हैं। जबकि ऐसी वीरता का बखान करना व्यर्थ है। वह परशुराम से यह भी कहना चाहते हैं कि उनकी वीरता खोखली है, उसमें किसी तरह की सत्यता नहीं है। जिस तरह से फूँक से पहाड़ को उड़ाया नहीं जा सकता, उसी तरह से अपनी झूठी वीरता का बखान करने वाले किसी का कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते।

(ग) इस काव्यांश से पता चलता है कि लक्ष्मण बहुत ही निर्भीक, वीर पुरुष हैं। वे बहुत ही मुँहफट परंतु स्पष्टवादी हैं। परशुराम के क्रोध से वह ज़रा-सा भी भयभीत नहीं होते है, अपितु अपनी तार्किक बुद्धि से वह परशुराम का विरोध करते हैं। लक्ष्मण बहुत ही चतुर स्वभाव के हैं। बहुत ही सरल, सहज वाणी द्वारा वह परशुराम का उपहास करने से भी नहीं चूकते।

2010

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 46.

'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' के आधार पर परशुराम के स्वभाव की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

Answer:

प्रश्न 3 का उत्तर देखें।

Question 47.

'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' पाठ में लक्ष्मण ने वीर योद्धा की क्या-क्या विशेषताएँ बताई हैं?

Answer:

प्रश्न 11 का उत्तर देखें।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 48.

परशुराम के क्रोध करने पर राम और लक्ष्मण की प्रतिक्रियाओं के आधार पर दोनों के स्वभाव की विशेषताएँ अपने शब्दों में लिखिए।

Answer:

परशुराम के क्रोध करने पर राम और लक्ष्मण की जो स्वभावगत विशेषताएँ उभर कर आती हैं, वे इस प्रकार हैं–

राम के मधुर वचन उनकी सहनशीलता, बड़प्पन तथा विनम्रता को प्रकट करते हैं। वे परशुराम के कठोर-से-कठोर वचनों का भी उत्तर श्रद्धानवत होकर दे रहे हैं। लक्ष्मण राम के स्वभाव से सर्वथा विपरीत हैं। वे परशुराम के क्रोधित वचनों को सुनकर स्वयं भी क्रोधित हो जाते हैं और उग्र हो उठते हैं। परशुराम के दर्प भरे वचनों का उत्तर वे व्यंग्य से देते हैं।

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 49.

निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

लखन कहा हसि हमरे जाना। सुनहु देव सब धनुष समाना ॥
का छति लाभु जून धनु तोरें। देखा राम नयन के भोरें ॥
छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू। मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू ॥
बोले चितै परसु की ओरा। रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा ॥
बालकु बोलि बधौं नहि तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोही ॥
बाल ब्रह्मचारी अति कोही। बिस्वबिदित क्षत्रियकुल द्रोही ॥
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही। बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही ॥
सहसबाहुभुज छेदनिहारा। परसु बिलोकु महीपकुमारा ॥

(क) लक्ष्मण धनुष टूटने के बारे में क्या-क्या तर्क दे रहे हैं?

(ख) 'केवल मुनि जड़ जानहि मोही' कहकर परशुराम लक्ष्मण को क्या बता देना चाहते हैं?

(ग) अपनी भुजाओं के बल के बारे में परशुराम ने क्या कहा?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(क) लक्ष्मण धनुष टूटने के बारे में तर्क देते हुए कह रहे हैं कि न जाने कितने ऐसे धनुष उन्होंने बचपन में ही तोड़ डाले तब तो परशुराम कभी क्रोधित नहीं हुए। फिर सारे धनुष एक-समान ही होते हैं। इस धनुष के टूटने पर ऐसी कौन-सी अनहोनी हो गई, वैसे भी धनुष इतना पुराना था कि हाथ लगाते ही टूट गया।

(ख) परशुराम इस कथन के द्वारा लक्ष्मण को यह बता देना चाहते हैं कि वे उसे बालक मानकर उसका वध नहीं कर रहे हैं इसलिए वह उन्हें मात्र मुनि न मान लें। इस कथन के पीछे की भावना है कि न तो वे अहिंसावादी हैं और न ही युद्ध आदि से डरते हैं। उन्होंने अनेक वीरों को मारा है और उन्हें भी समाप्त कर सकते हैं।

(ग) अपनी भुजाओं के बल के बारे में परशुराम ने कहा है कि उन्होंने इन्हीं भुजाओं के बल पर अनेक बार पृथ्वी को क्षत्रियों से रहित किया है। अनेक महा-योद्धाओं को उन्होंने मारा है और उनका फरसा सहस्रबाहु की भुजाओं को भी काट चुका है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in